Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 6, Nov-Dec – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 15/12/2019 Accepted on : 27/12/2019 Publication Date: 30/12/2019

विकासखण्ड–भैसियाछाना के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

[1] डॉ. राजेन्द्र सिंह पथनी, [2] देवेन्द्र सिंह चम्याल

[1] प्रोफेसर, संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, परिसर निदेशक, एस. एस. जे. परिसर, अल्मोड़ा, कुमाऊँ वि. वि. नैनीताल।

[2] एम. एस–सी. रसायन विज्ञान, एम. ए . गणित, एम. ए . इतिहास, एम. एड. (गोल्ड मैडलिस्ट), नेट (शिक्षाशास्त्र), शोध छात्र एवं अतिथि व्याख्याता, शिक्षा संकाय, एस. एस. जे. परिसर, अल्मोड़ा, कुमाऊँ वि. वि. नैनीताल।

ई–मेलः deepu.chamyal666@gmail.com

सारांशः शिक्षा वह माध्यम है जो मानव को पशु–तुल्य से मनुष्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य पहने जाने वाले परिधान के साथ–साथ अपने उठने–बैठने, चलने–फिरने और सामाजिक रीति रिवाजों को सीखता है। इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। कार्य संतुष्टि लोगों के जीवन और कार्यस्थल में उनकी उत्पादकता का महत्वपूर्ण पहलू है। कार्य संतुष्टि जिम्मेदारी, व्यापक कैरियर के लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रति भागीदारी एवं संगठन की उत्पादकता में योगदार देने का नेतृत्व कर सकता है। अध्ययन में डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, डी.एन.ए . मुथा द्वारा विकसित मापनी को प्रयोग में लाया गया है। इस प्रश्नावली में 29 पद हैं। जिनमें से पद सं. 06 व 29 ऋणात्मक पद हैं। शेष 27 पद धनात्मक हैं। प्रयुक्त प्रश्नावली की विश्वनीयता अर्द्ध–विच्छेदित विधि (सम तथा विषम पदों को सह सम्बन्धित कारक) द्वारा स्पीयरमैन–ब्राउन सूत्र का प्रयोग करते हुए 0.95 है। परीक्षण पुनः परीक्षण विधि से इसकी विश्वसनीयता 0.73 है। इस प्रकार यह प्रश्नावली आन्तरिक दृढ़ता तथा अंको की स्थिरता के संदर्भ में उच्च स्तर पर विश्वसनीयता है। इस प्रश्नावली में केवल उच्च विभेदीकारी पद ही सम्मिलित किए गये हैं तथा इसकी विषय वस्तु वैधता भी अति उच्च है क्योंकि इसमें वे ही पद सम्मिलित किए गए हैं जिनके लिए अध्यापक कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित निर्णायकों ने 100 प्रतिशत स्वीकृति प्रदान की थी। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु विकासखण्ड–भैसियाछाना के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाएँ प्रस्तुत शोध कार्य की जनसंख्या थी। प्रस्तुत शोध कार्य में समय, धन तथा साधनों की सीमाओं को देखते हुए विकासखण्ड–भैसियाछाना के 30 राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों को चुना गया। न्यादर्श हेतु प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 60 शिक्षिक–शिक्षिकाओं का ही चयन किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए न्यादर्श का चयन सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

मख्य शब्दः प्राथमिक. विद्यालय. कार्य. संतष्टि. शिक्षक तथा शिक्षिकायें।

१. प्रस्तावनाः

वैदिक काल से ही गुरु का स्थान सर्वोच्च रहा है। चाहे राजा हो या रंक सभी गुरु के समक्ष नतमस्तक होते थे। जिस प्रकार गुरु शिक्षार्थियों के लिए कठिन परिश्रम करता था, ऐसे ही शिक्षार्थी भी अपने गुरु के लिए निस्वार्थ भाव से समर्पित था। परन्तु अब वैश्वीकरण व तकनीकों के बहुतायत उपयोग के कारण गुरु–शिष्य सम्बन्ध में परिवर्तन आ गया है। यह परिवर्तन गुरु के महत्व को कम नहीं कर सकता। हमारा वर्तमान समाज व राष्ट्र परिवर्तन व विकास के एक नाजुक परन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। शिक्षकों के ऊपर ही राष्ट्र के भावी निर्माताओं को तैयार करने का दायित्व होता है। **हुमायूँ कबीर** द्वारा कहा भी गया है– **अध्यापक वास्तविक रुप में राष्ट्र के भाग्य का निर्माता है।** शिक्षक का कार्य केवल शिक्षित करने तक सीमित नहीं रहा है। बल्कि शिक्षक भविष्य की सीढ़ी पार कराकर लक्ष्य तक पहुंचाता है। समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं, आदर्शों, मूल्यों आदि को वास्तविक रुप देने की जिम्मेदारी भी शिक्षकों को वहन करनी होती है। वास्तव में शिक्षक अपने प्रयासों से भावी समाज की संरचना करते हैं, इसलिए शिक्षकों को 'सामाजिक अभियन्ता' की संज्ञा दी जाती है। वह बालकों को उनकी क्षमतानुसार तैयार कर एक आदर्श समाज का निर्माण करता है। **डॉ सैयद्दीन** ने एक अध्यापक की महत्ता को बताते हुए कहा है कि –**''यदि आप किसी देश की जनता के सांस्कृतिक स्तर को मापना चाहते हैं तो इसका अच्छा तरीका यह है कि आप मालूम करें कि उस समाज में अध्यापकों की सामाजिक स्थिति क्या है तथा उन्हें कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है।''**

चूंकि श्रेष्ठ शिक्षकों के अभाव में सुयोग्य छात्रगण भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते हैं। अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुण शिक्षकों की अनुपस्थिति में प्राणहीन हो जाती है। शिक्षकगण शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं। अच्छे शिक्षक छात्रों को वांछित व्यवहार परितर्वन में सहायता प्रदान करते हैं तथा उनको सर्वांगीण विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं। वर्तमान में छात्रों पर शिक्षा का अत्यधिक बोझ है। वे साप्ताहिक परीक्षा, मासिक परीक्षा, छमाही परीक्षा, व वार्षिक परीक्षा के साथ अत्यधिक पुस्तकों के बोझ से दबे हैं। बालकों को गृहकार्य के अतिरिक्त कक्षा कार्य व अन्य विविध क्रियाकलापों में प्रतिभाग हेतु सम्मिलित किया जाता है। इन सभी कार्यों का मूल्यांकन शिक्षकों को करना पड़ता है।

21वीं शताब्दी में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में तीव्र परिवर्तन हो रहा हैं जिससे अध्यापकों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां, उनका स्वयं का दायित्व और अध्यापन कार्य संतोष तीनों ही प्रभावित हो रहे हैं। एक सफल शिक्षक बेहतर होता है क्योंकि वह अपने कार्यों को अंतर्ज्ञान पर आधारित नहीं करता है बल्कि योजना बनाते हुए सावधानीपूर्वक विश्लेषण करता है, एक अच्छा दृष्टिकोण यह है कि सफल शिक्षक शिक्षण के लिए योग्यता एवं अनुकूल अभिवृत्ति होते हुए जो स्वयं में सुधार हेतु कार्य में व्यस्त रहता है। **लोके (1969)** के अनुसार कार्य संतुष्टि एक संगठन के अंदर अपने हिस्से के योगदान के प्रदर्शन के माध्यम से लक्ष्यों की प्राप्ति के परिणाम से भावनात्मक आनंद की प्राप्ति है। कार्य संतुष्टि एक ऐसा महत्वपूर्ण पक्ष है जो किसी भी व्यक्ति के व्यावसायिक कार्य की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। जो लोग अपने व्यावसायिक कार्य से संतुष्ट होते है वे व्यक्ति अपने उस कार्य को पूरी लगन व आत्मविश्वास से करते हैं तथा कार्य की पूर्णता के बाद प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। कार्य में उनकी रुचि होने के कारण वह अपने कार्य की पूरी निष्ठा से करने का प्रयास करते हैं। **ब्लम तथा नेलर** के अनुसार– **''कार्य संतुष्टि कर्मचारी की उन अभिवृत्तियों का परिणाम हैं, जिन्हें वह अपने कार्य या व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक कारकों एवं सामान्य जीवन के प्रति बनाए रखता है। ''** अध्यापन कार्य संतुष्टि अध्यापक के लिए एक प्रकार की अभिप्रेरणा है। जिसके फलस्वरुप अध्यापक अपना कार्य सम्पादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है। यह कार्य संतुष्टि केवल व्यैक्तिक स्तर तक सीमित होता है। इसकी व्याख्या सामूहिक रुप से नहीं की जा सकती है। क्योंकि कार्य संतुष्टि किसी अध्यापक में अंतनिर्हित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है, जिसे अध्यापक अपने अध्यापन व्यवसाय से जीवन काल में बनाए रखने का प्रयास करता है। एक सफल शिक्षक बेहतर होता है क्योंकि वह अपने कार्यों को अंतर्ज्ञान पर आधारित नहीं करता है बल्कि योजना बनाते हुए सावधानीपूर्वक विश्लेषण करता है, एक अच्छा दृष्टिकोण यह है कि सफल शिक्षक शिक्षण के लिए योग्यता एवं अनुकूल अभिवृत्ति होते हुए जो स्वयं में सुधार हेतु कार्य में व्यस्त रहता है। इस प्रकार **महासान (1995)** के अनुसार, ''शिक्षण निश्चित रूप से सबसे पुराने व्यवसायों में से एक है, आधुनिक औपचारिक स्थितियों विशेष रूप से युवा लोगों के साथ शिक्षक स्वस्थ विकास और स्थिर वयस्क जीवन के लिए शिक्षा, गाड़ी, गाइड आदि का निर्माण करता है। एक शिक्षक विद्यालय में मुख्य गतिशील बल है। विद्यालय परिस्थितियों में विद्यालय जब तक शिक्षकों का अस्तित्व नहीं है, सब कुछ अर्थविहीन है।

राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं को व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा जैसे निजी विद्यालय के बच्चों से प्रतिस्पर्धात्मक तुलना, शिक्षणेत्तर कार्य में संलग्नता जैसे चुनाव ड्यूटी, पल्स पोलियो, मतगणना, जनगणना, बालगणना, आर्थिक गणना, विभिन्न प्रशिक्षणों में प्रतिभाग व अधिकारियों का दबाव, शिक्षकों की कमी के कारण बहुकक्षा शिक्षण, विभिन्न स्तर के बच्चो के साथ समायोजन, निर्माण कार्य, मध्याह्न भोजन योजना, प्रत्येक सप्ताह दिए जाने वाले अतिरिक्त पोशाहार का भार उन पर होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक छात्र के आधार कार्ड बनवाने की जिम्मेदारी इत्यादि कारणों की वजह से कुण्ठा, तनाव का सामना करना पड़ता है। वहीं दूसरी ओर निजी विद्यालयों में कार्यरत को काम बोझ, व्यावसायिक असुरक्षा व कभी –कभी प्रबन्धकों के शोषण तथा अभिभावकों की अपने पाल्यों की शिक्षा के प्रति अत्यधिक आशा के कारण तनाव का सामना करना पड़ता है और यही तनाव उनके कार्य को प्रभावित करता है। जिससे उनके कार्य के प्रति संतुष्टि प्रभावित हो सकती है। प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि से तात्पर्य व्यावसायिक कार्य संतुष्टि मापनी पर शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों से है। शिक्षक शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि में कुछ अध्ययन निम्न हैं:–

शर्मा तथा जीवन ज्योति (2006) द्वारा जम्मू शहर के विद्यालयी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होते है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की तुलना में माध्यमिक स्तर के शिक्षक अधिक पाए गए। सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की तुलना में निजी विद्यालय के शिक्षक अधिक संतुष्ट पाए गए। कार्य की प्रकृति तथा समाज सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर पुरुषों की तुलना में महिला शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पायी गयी। अतः शिक्षक व शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर अपना प्रभाव डालते है।

खान (2010) द्वारा महाविद्यालयी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य लिंग, वैवाहिक स्तर तथा महाविद्यालयों के आधार पर महाविद्यालयी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का विश्लेषण करना था। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सिवल जिले के महाविद्यालयी पुरुष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षिकाएं

अधिक संतुष्ट पायी गयी तथा अविवाहित शिक्षकों की तुलना में विवाहित शिक्षक अधिक संतुष्ट पाये गये। जबकि निजी विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों में अधिक कार्य संतुष्टि पायी गयी।

गिरेन्स (1988), मढ़नावत, भारद्वाज, कछवा (2007), जॉन (2007), डेनियल गेरहार्ड (2008), सलीम एवं महमूद (2010), हसन एवं सलाहुद्दीन (2012) ने अपने अध्ययन में पाया कि कार्यसंतुष्टि का विभिन्न चरों के साथ सार्थक सहसंबंध पाया गया एवं सभी शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट पाए गए जबकि **गुप्ता (1980) रामलिंगा (2000), वंदना (2009)** ने अपने अध्ययन में पाया कि कार्यसंतुष्टि का अन्य चरों के साथ कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **मिश्र एवं दुरेहा (2009)** ने पाया कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं मानसिक तनाव पर ध्यान के प्रशिक्षण से सुधार किया गया। **मौर्या (1983), खातून (2000), तस्नीम (2006), बासु (2009), राय (2012) अरूयुगासामी (2012)** ने अपने अध्ययन में पाया कि महिला शिक्षकों में पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई।

विद्यालय प्रमुख रुप से शिक्षण कार्य, शोध कार्य तथा प्रसार के साधन होते हैं। अतः प्रत्येक शिक्षक का यह प्रमुख कतव्य होता है कि वह पूर्व में वर्णित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करें। यह कार्य शिक्षण के माध्यम से ही किया जा सकता है। अतः यह अत्यावश्यक हो जाता है कि शिक्षक तथा उसके प्रमुख कार्य शिक्षण का अध्ययन किया जाय। शिक्षक के व्यवहार के अध्ययन के अंतर्गत व सभी तत्व आ जाते हैं जो शिक्षक के व्यवहार को परिवर्तित करते हैं एवं उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। उक्त तत्वों के ज्ञान हेतु शिक्षक के कार्य सन्तोष को जानना अति आवश्यक है।

इस लघु शोध अध्ययन में शिक्षकों के कार्य सन्तोष का अध्ययन उक्त आधारों पर ही किया गया है। जिससे उन कारकों को दूर करने अथवा सीमित करने का प्रयास किया जा सके जो शिक्षकों के कार्य संतोष को प्रभावित करते है। इसी प्रकार जो कारक शिक्षक के कार्य संतोष को उन्नत या प्रभावोत्पादक बनाते हैं उनके प्रति अधिक ध्यान दिया जा सकता है। जिससे वह अपनी शक्ति तथा प्रतिभा का समुचित उपयोग कर सके। जिससे अधिक प्रभावशाली ढंग से शिक्षक अपना शिक्षण कार्य करेगा, उतना ही उचित तरीके से वह अपने छात्र के व्यावहारिक प्रतिरुप को वांछित दिशा देने में सफल हो सकता है। अतः वर्तमान में शिक्षकों के कार्य संतोष का अध्ययन किये जाने की अत्यधिक आवश्यकता है। अतः इस शोध की आवश्यकता इसिलिए है ताकि इस पक्ष से सम्बन्धित सभी नीति निर्देशकों, नीति निर्माताओं, प्रशासकों का सम्बन्धित विषयों पर ध्यान आकर्षित किया जा सके तथा इन समस्याओं पर गौर किया जा सके व आवश्यक सुधार हेतु सुझाव प्राप्त हो व उनका सही निवारण हो सके। जिससे शिक्षकों व शिक्षिकाओं में तनाव न हो तथा उनमें कार्य के प्रति संतुष्टि हो।

समस्या कथन– " विकासखण्ड–भैसियाछाना के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।"

२. शोध समस्या के उद्देश्य :

शोध समस्या के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं:–

- निवास स्थान के आधार पर अर्थात ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- लिंग के आधार पर अर्थात पुरुष अध्यापकों तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शैक्षिक विषय वर्ग के आधार पर अर्थात कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

३. अनुसंधान के उपकरण:

शिक्षक कार्य संतुष्टि प्रश्नावली (टी0जे0एस0क्यू0)–

इस शोधकार्य में डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता तथा डी.एन.ए . मुथा द्वारा विकसित मापनी को प्रयोग में लाया गया है। इस प्रश्नावली में 29 पद हैं। जिनमें से पद सं. 06 व 29 ऋणात्मक पद हैं। शेष 27 पद धनात्मक हैं। प्रत्येक प्रश्न के सामने हॉ अथवा नहीं दो विकल्प दिए गए हैं। 06 व 29 को छोड़कर अन्य सभी पदों में 'हॉ' प्रत्युत्तर के लिए 1 तथा नहीं प्रत्युत्तर के लिए 0 अंक हैं व पद सं. 06 व 29 ऋणात्मक पदों के लिए ठीक इसके विपरीत अर्थात ''हॉ'' प्रत्युत्तर

के लिए 0 तथा 'नहीं' प्रत्युत्तर के लिए 1 अंक है। उक्त प्रश्नावली अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का मापन निम्नलिखित चार पक्षों के आधार पर सामूहिक रुप से करती है। जिनका विवरण तालिका में दिया गया है–

तालिका 1 अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का मापन के चार पक्ष

क्र.सं.	क्षेत्र	कथनों की सं0
1	कार्य करने की परिस्थितियों से संतुष्टि सम्बन्धी प्रश्न	6
2	वेतन कार्य सुरक्षा व पदोन्नति के नियमों से सन्तुष्टि सम्बन्धी प्रश्न	10
3	अपने अधिकार योग्यता तथा कार्य सम्पादन के प्रति संतुष्टि सम्बन्धी प्रश्न	6
4	संस्था की योजना तथा नीतियों से सन्तुष्टि सम्बन्धी प्रश्न	7

परीक्षण की विश्वसनीयता–

प्रयुक्त प्रश्नावली की विश्वनीयता अर्द्ध–विच्छेदित विधि (सम तथा विषम पदों को सह समन्धित कारक) द्वारा स्पीयरमैन–ब्राउन सूत्र का प्रयोग करते हुए 0.95 (एन = 100) है। परीक्षण पुनः परीक्षण विधि से इसकी विश्वसनीयता 0.73 है। जो 0.01 स्तर पर सार्थक पायी गई है। इस प्रकार यह प्रश्नावली आन्तरिक दृढ़ता तथा अंको की स्थिरता के संदर्भ में उच्च स्तर पर विश्वसनीयता है।

परीक्षण की वैधता–

इस प्रश्नावली में केवल उच्च विभेदीकारी पद ही सम्मिलित किए है तथा इसकी विषय वस्तु वैधता भी अति उच्च है क्योंकि इसमें वे ही पद सम्मिलित किए गए है जिनके लिए अध्यापक कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित निर्णायकों ने 100 प्रतिशत स्वीकृति प्रदान की थी।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु विकासखण्ड–भैसियाछाना के समस्त प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकायें प्रस्तुत शोध कार्य की जनसंख्या थी।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध कार्य में समय, धन तथा साधनों की सीमाओं को देखते हुए विकासखण्ड–भैसियाछाना के 30 राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों को चुना गया। न्यादर्श हेतु प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 60 शिक्षिक–शिक्षिकाओं का ही चयन किया गया।

न्यादर्श चयन विधि– प्रस्तुत शोध कार्य के लिए न्यादर्श का चयन सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरणों का प्रशासन, अंकन तथा संकलन– शोध उपकरण के रूप में प्रयोग की गई प्रश्नावली को विकासखण्ड–भैसियाछाना के 30 राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों के 60 शिक्षिक–शिक्षिकाओं के मध्य वितरित किया गया। शोध उपकरणों का अंकन करने के लिए उत्तर मार्गदर्शिका का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक शिक्षक–शिक्षिका द्वारा जो प्रश्नावली भरी गयी है अन्त में सही उत्तरों के अंक गिनकर कुल योग प्राप्त किया गया।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण– प्रस्तुत अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विस्तार से व्याख्या की गई है। शोध अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां मध्यमान, मानक विचलन तथा ''टी'' मान का प्रयोग किया गया। शिक्षिक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर ज्ञात करने हेतु 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर टी–मान की गणना की गयी।

शोध परिणामों का प्रस्तुतिकरण एवं व्याख्या– शोध अध्ययन हेतु जिन 60 शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन किया गया, उनमें ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षिक–शिक्षिकायें (58.33%), शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकायें (41.66%), पुरुष अध्यापक(55%), महिला अध्यापिकायें (45%), कला शैक्षिक विषय वर्ग शिक्षिक–शिक्षिकाओं शिक्षक–शिक्षिकाओं (50%), विज्ञान शैक्षिक विषय वर्ग(50%), राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाएँ

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 6, Nov-Dec – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 15/12/2019 Accepted on : 27/12/2019 Publication Date: 30/12/2019

(53.33%) व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाएँ (46.67%) सम्मिलित थे। शिक्षिक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित आकड़ों का विश्लेषण निम्न है:–

तालिका 2 निवास स्थान के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

निवास स्थान	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t–मान	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	35	22.69	3.41	7.77	0.01
शहरी	25	17.64	1.47		

D.f. = 58, सार्थकता स्तर 0.01 पर t-मान सार्थक ।

उपरोक्त तालिका 2 से स्पष्ट है कि निवास स्थान के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर था (t=7.77)। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग–अलग पायी गयी। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि, शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि से अधिक पायी गयी। इसका अधिक स्पष्ट चित्र लाइन ग्राफ 1 से प्रदशित है। जबकि इसके विपरीत **राठौर एवं वर्मा (2006)** ने पाया कि शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि से अधिक पायी गयी।

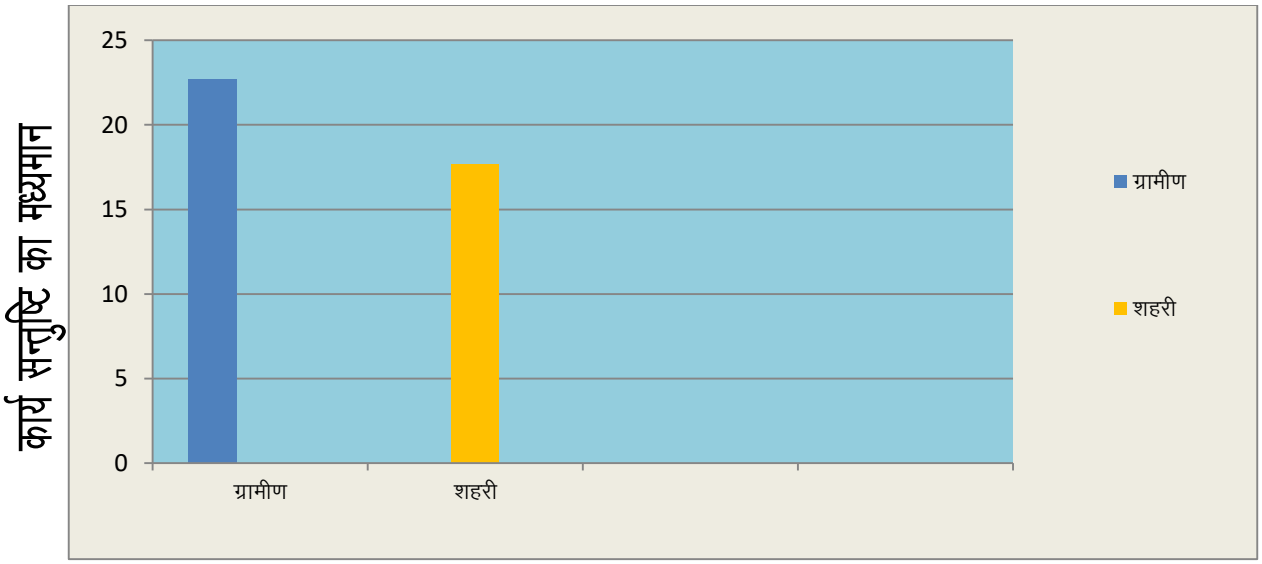

अध्यापक–अध्यापिका

चित्र 1 ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान

इसका कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले शिक्षक वहॉ के विकास तथा अन्य अधिकारियों के वेतन, सुविधाओं इत्यादि को देखकर अपने जॉब के प्रति नकारात्मक हो जाते है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षक इन चीजों को हर वक्त अपने दिमाग में नहीं रखते हो। अन्य कारण यह भी हो सकता है कि शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक जब ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में रोज आना–जाना शहर से ही करते है तो वे अत्यधिक थक जाते है जिससे वे जॉब के प्रति संतुष्ट नहीं रहते है तथा ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षकों का स्कूल के पास ही कमरा होता है जिससे उनके पास पर्याप्त समय होता है तथा अन्य कार्य भी कर लेते हैं तथा वे अपने जॉब से भी संतुष्ट रहते हैं।

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 6, Nov-Dec – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 15/12/2019 Accepted on : 27/12/2019 Publication Date: 30/12/2019

तालिका 3 लिंग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

लिंग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t–मान	सार्थकता स्तर
पुरुष अध्यापक	33	22.40	3.31	.78	असार्थक
महिला अध्यापिका	27	21.91	1.37		

D.f. = 58, सार्थकता स्तर 0.05 पर t-मान असार्थक ।

उपरोक्त तालिका 3 से स्पष्ट है कि लिंग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं था (t=.78)। पुरुष अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य सन्तुष्टि समान पायी गयी। इसका अधिक स्पष्ट चित्र लाइन ग्राफ 2 से प्रदशित है। उपरोक्त परिणाम को **चन्द्रा गुरुरानी (1978), उप्रेती तथा पन्त (1991)** के परिणाम द्वारा समर्थन मिलता है तथा उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि पुरुष अध्यापकों तथा महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई अन्तर नहीं था। जबकि उपरोक्त परिणाम के विपरीत **थॉमस (1950), लेविंग्ड तथा सिंह (1974)** ने अपने अध्ययन में पाया कि महिला अध्यापिकायें पुरुष अध्यापकों से अधिक संतुष्ट थी।

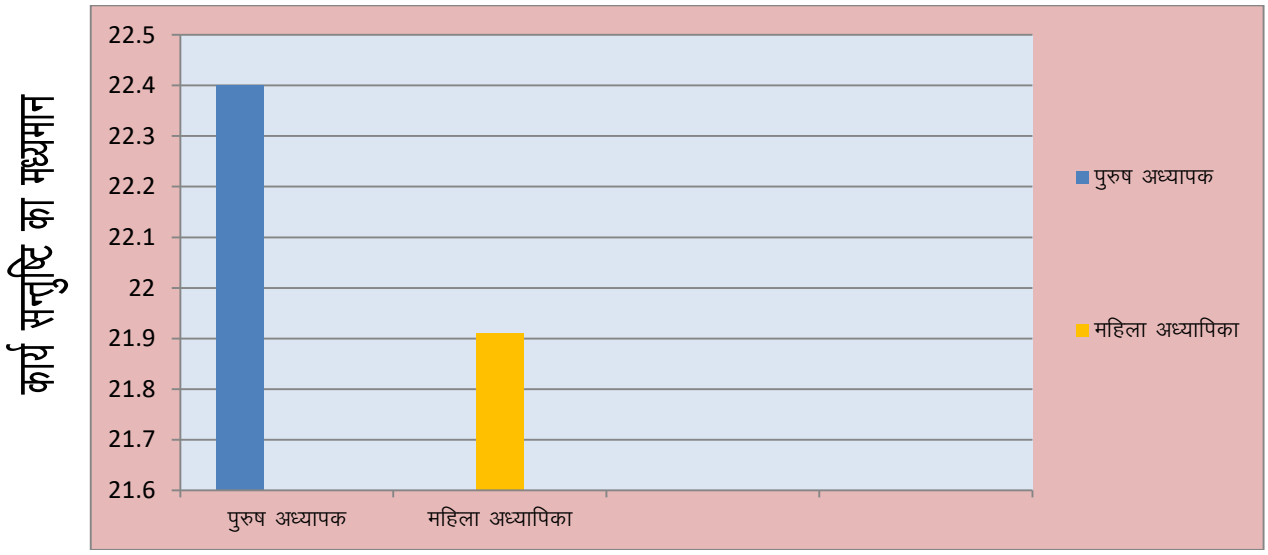

चित्र 2 पुरुष अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान

इसका कारण सम्भवतः समान वेतन, समान सुरक्षा, समान पदोन्नति के अवसर, समान सेवा, समान योग्यता, कार्यस्थल में समानता, सेवा सम्बन्धी समान नियम, समान अधिकार आदि में समानता हो सकती है। क्योंकि वर्तमान समय में प्रत्येक क्षेत्र में दोनों में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता है।

तालिका 4 शैक्षिक विषय वर्ग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

शैक्षिक विषय वर्ग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t–मान	सार्थकता स्तर
कला	30	22.7	2.96	6.36	0.01
विज्ञान	30	18.57	1.93		

D.f. = 58, सार्थकता स्तर 0.01 पर t-मान सार्थक।

उपरोक्त तालिका 4 से स्पष्ट है कि शैक्षिक विषय वर्ग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया (t=6.36)। कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग– अलग पायी गयी। कला वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि, विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि से अधिक पायी गयी। इसका अधिक स्पष्ट चित्र लाइन ग्राफ 3 से प्रदशित है।

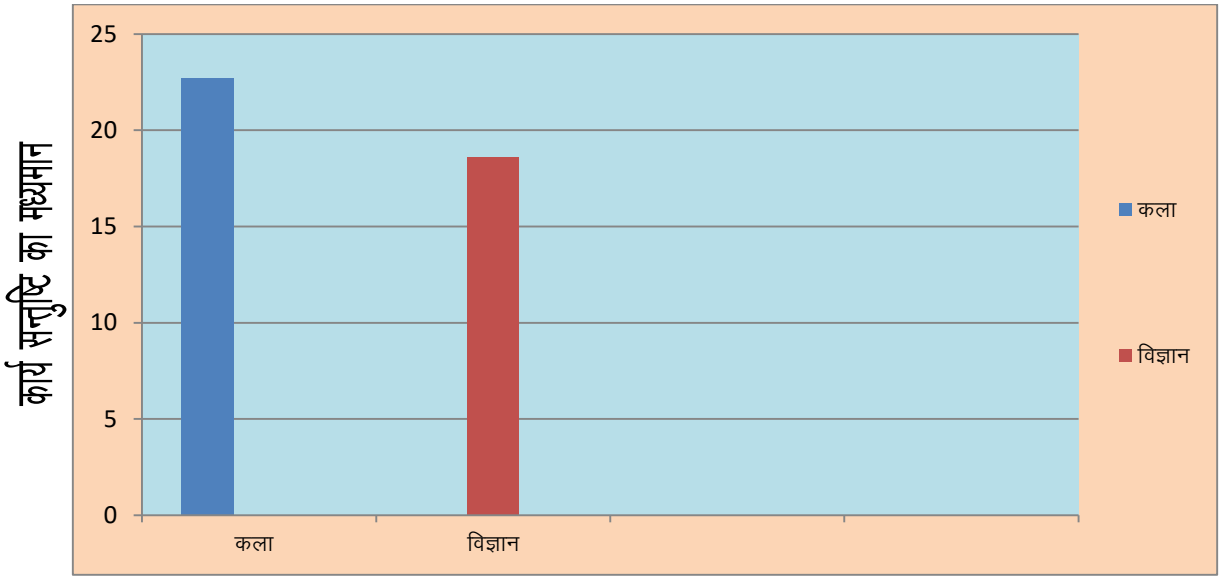

अध्यापक–अध्यापिका

चित्र 3 कला वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान

इसका कारण यह हो सकता है कि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षाऐं ज्यादा हो सकती है क्योंकि उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में विज्ञान विषय की पढ़ाई में ज्यादा मेहनत की होती है। उनके परिश्रम के हिसाब से उनकी इच्छा उच्च स्तर के जॉब की हो सकती है। जबकि कला संकाय के विषयों में विज्ञान की अपेक्षा कम परिश्रम की आवश्यकता होती है जिससे कला वर्ग के शिक्षा का इस स्तर के जॉब से भी ज्यादा निराश नहीं हो सकते हैं।

तालिका 5 राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t–मान	सार्थकता स्तर
राजकीय	32	22.28	3.07	7.75	0.01
निजी	28	17.57	1.45		

D.f. = 58, सार्थकता स्तर 0.01 पर t-मान सार्थक।

उपरोक्त तालिका 5 से स्पष्ट है कि राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया (t=7.75)। राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग– अलग पायी गयी। राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि, निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि से अधिक पायी गयी। इसका अधिक स्पष्ट चित्र लाइन ग्राफ 4 से प्रदशित है। उपरोक्त परिणाम को **सेलर और रंगनाथन (1988), अहमद रहीम और जमाल (2003)** के परिणाम द्वारा समर्थन मिलता है **सेलर और रंगनाथन (1988), अहमद रहीम और जमाल (2003)** ने अपने अध्ययन में पाया कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षक, निजी विद्यालयों के शिक्षको की अपेक्षा अधिक संतुष्ट पाए गए। जबकि उपरोक्त परिणाम

के विपरीत **शर्मा तथा जीवन ज्योति (2006)** ने पाया कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में निजी विद्यालय के शिक्षक अधिक संतुष्ट पाए गए।

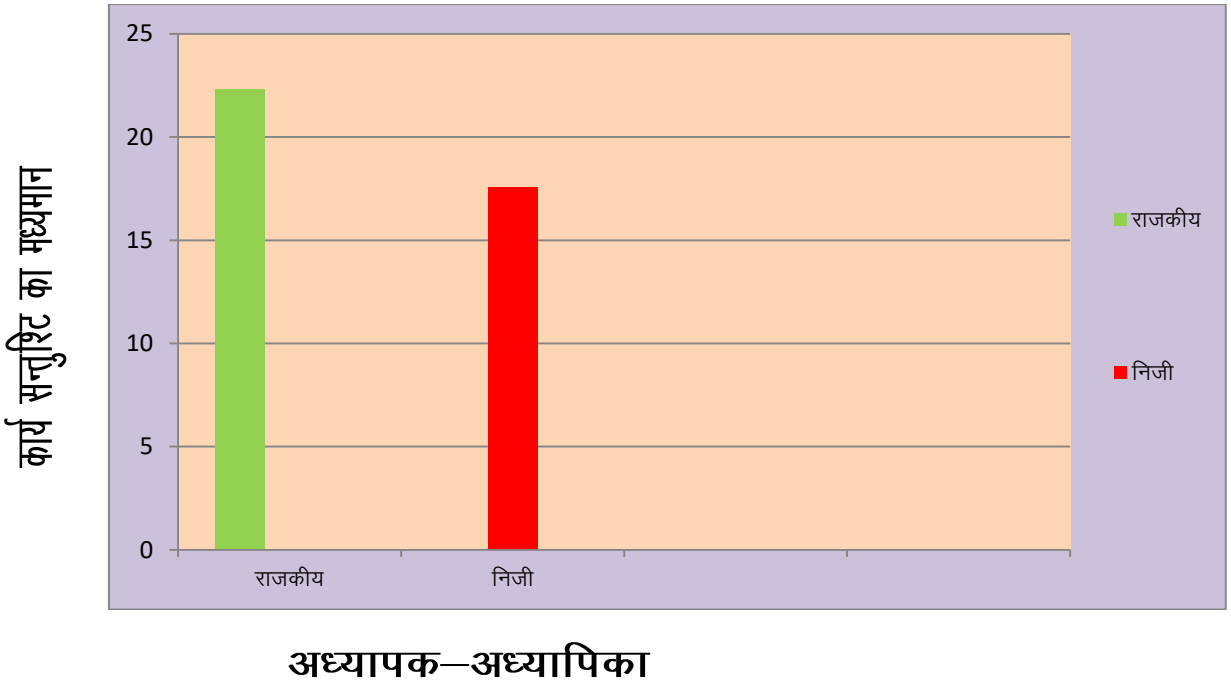

चित्र 4 राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान

इसका कारण यह हो सकता है कि राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की स्थायी जॉब होती है जबकि निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की जॉब अस्थायी होती है तथा प्राइवेट विद्यालयों में कार्य की असुरक्षा तथा पक्षपात आदि है। जिससे उन्हें अपनी जॉब से हमेशा डर लगा रहता है। इसका अन्य कारण यह भी हो सकता है कि निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं को स्कूल में कार्य भी अधिक करना पड़ता है। जिससे वे जॉब के प्रति नाखुश रहते हैं।

४. **व्याख्या:**

ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 22.69, शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 17.64, पुरुष अध्यापकों के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 22. 40, महिला अध्यापिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 21.91, कला शैक्षिक विषय वर्ग शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 22.7, विज्ञान शैक्षिक विषय वर्ग शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 18.57, राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 22.28 व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 17.57 था। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग– अलग पायी गयी। पुरुष अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य सन्तुष्टि लगभग समान पायी गयी। कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग–अलग पायी गयी। राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग– अलग पायी गयी।

५. **उपसंहार:**

- ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
- पुरुष अध्यापक की कार्य सन्तुष्टि तथा महिला अध्यापिका की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- कला वर्ग शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
- राजकीय व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

६. **शैक्षिक निहितार्थ:**

प्रस्तुत शोध कार्य में यह ज्ञात हुआ कि राजकीय व निजी दोनों प्रकार के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं में उत्तम कोटी की कार्य सन्तुष्टि है अतः यह जानना आवश्यक हैं, वे कौन–कौन से कारक हैं जो शिक्षकों में चिन्ता व्याप्त करते है निजी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य परिस्थिति वेतन, सुविधाएं आदि में सुधार कर शिक्षकों की चिन्ताओं को दूर किया जा सकता है। शिक्षकों के वेतन, कार्य सुरक्षा व पदोन्नति के अवसर सम्बन्धी नियमों में संशोधन किया जाना चाहिए। जिससे शिक्षक इन कारणों की ओर से निश्चित होकर अपना कार्य कर सके। विद्यालयों में फर्नीचर व समस्त सहायक सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। अधिकार, योग्यता तथा कार्य के संदर्भ में भी शिक्षकों को पर्याप्त महत्व दिया जाना चाहिये अपने अधिकारों का दुरुपयोग, अयोग्य अध्यापकों की पदोन्नति तथा वेतनवृद्धि कार्य का असमान वितरण आदि उनके ऐसे कारण है जो कि शिक्षकों के असंतोष मे वृद्धि करते हैं। अतः प्रशासन का सभी शिक्षकों के लिये समान दृष्टिकोण होना चाहिये। इसके साथ–साथ शिक्षकों से इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये कि समाज में सम्मान प्राप्त करने के साथ–साथ वे आर्थिक रुप से भी संतुष्ट रहें। प्राचार्य, अध्यापक एवं छात्र समाज के ऐसे अभिन्न अंग हैं, जिनका प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है। विद्यालय के प्रबन्धन को शिक्षकों की कार्य संतुष्टि बढ़ाने हेतु व्यवसाय,कार्यस्थिति, अधिकार एवं वेतन के प्रति अभिवृत्ति में वृद्धि का प्रयास करना चाहिए। शिक्षकों हेतु शिक्षकों को शैक्षणिक अभिवृत्ति में वृद्धि हेतु उपयुक्त अवसर प्रदान किया जाय । शैक्षणिक स्तर में सुधार हेतु शासकीय स्तर पर शैक्षिक नीति निर्धारकों द्वारा विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था तथा शैक्षणिक कार्यक्रमों में परिवर्तन कर विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं का आंकलन कर उनके अनुरूप शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षकों की शैक्षणिक अभिवृत्ति एवं कार्य संतुष्टि में वृद्धि हेतु विद्यालय प्रबंधन को उन्हें उचित मानदेय दिया जाना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय में एक परामर्शदाता की नियुक्ति होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों के समक्ष आने वाली विभिन्न समस्याओं को मनोवैज्ञानिक तरीकों से सुलझाकर उन्हें सही दिशा निर्देश दे सकें। शिक्षकों को उनके उत्कृष्ट कार्यो हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाना चाहिए। शिक्षकों को शिक्षण कार्य पूर्णतः ईमानदारी से करना चाहिए। शिक्षकों की शैक्षणिक अभिवृत्ति में वृद्धि हेतु उन्हें समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित कराया जाय। विद्यालयों में शिक्षकों को यदि अतिरिक्त कार्य हेतु अवकाश के दिनो में बुलाया जाता है तो उन्हें भत्ता प्रदान किया जाना चाहिए अथवा अतिरिक्त अवकाश दिया जाय। शिक्षकों की शैक्षणिक अभिवृत्ति में वृद्धि हेतु सहयोग किया जाय एवं कार्य संतुष्टि में कमी होने के कारणों का पता कर दूर करने के प्रयास किए जाय। निजी विद्यालयो का वेतन बढ़ाया जाय जिससे शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अच्छी हो।

विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को विभिन्न सुविधाएँ एवं उन्नति के ऐसे अवसर प्रदान किये जाएँ जिससे उनकी शैक्षणिक अभिवृत्ति में सकारात्मक वृद्धि हो तथा उन्हें इतना वेतनमान प्रदान किया जाय कि वह अपने कार्य से संतुष्ट हों, तभी वह अच्छे छात्रों का निर्माण कर सकेंगे जो कि देश का भविष्य हैं एवं शिक्षा के स्तर में वृद्धि हो सकेगी।

विद्यालय प्रशासकों के लिए– शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को बढ़ाने के लिए उन पर कार्य के अतिरिक्त भार को कम करने के लिए अन्य कर्मचारी व शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए। उत्कृष्ट शिक्षकों को पुरुस्कृत करने का प्रावधान होना चाहिए। शिक्षकों में तनाव दूर करने के लिए मनोरंजन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए जैसे योग, कैम्प, मैडिटेशन कैम्प इत्यादि।

शिक्षकों के लिए– शिक्षकों को समय–समय पर ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भेजा जाना चाहिए जिससे वे अपने व्यवसाय में नवाचारों को सीख पाए तथा ऐसे कौशल अर्जित कर पाए कि वे अपने कार्य एवं समय का प्रबन्धन करना सीख सकें।

नीति निर्धारकों के लिए– निजी विद्यालयों में शिक्षिकों पर जो अनावश्क कार्यभार होता है व जिसके कारण वे अत्यधिक तनावग्रस्त होते हैं तथा उन्हें कार्य में असुरक्षा की भावना भी होती है। इन विद्यालयों में भी इनकी नियुक्ति से लेकर कार्य दशाओं, सुविधाओं से सम्बन्धित कुछ मानकों का निर्माण किया जाना आवश्यक है। इसके लिए नीति निर्माताओं को इस दशा में कार्य करने चाहिए।

प्राचार्यों हेतु – प्राचार्य को शिक्षकों से ऐसे सम्बन्ध बनाए रखना चाहिये जिससे वे अपनी समस्याएँ प्राचार्य को बता सकें एवं शिक्षकों को उन्नति के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। विद्यालय के प्राचार्य का दृष्टिकोण प्रत्येक शिक्षक के लिए समान होना चाहिए। प्राचार्य को विद्यालय में शिक्षण कार्य में नये–नये प्रयोग हेतु शिक्षकों का सहयोग करना चाहिए। अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि शासकीय एवं निजी विद्यालय के प्रबन्धन में एक आधारभूत अंतर है जो कि वेतन से सम्बन्धित है। शिक्षकों में कम वेतन के कारण असंतुष्टि की भावना होती है, इसको दूर करने का प्रयास किया जाय ।

परामर्शदाताओं के लिए– शिक्षक–शिक्षिकाओं की मानसिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं के निराकरण के लिए समय–समय पर परामर्शदाताओं की सहायता भी शिक्षकों को प्रदान की जानी चाहिए जिससे वे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को ही प्राप्त कर चिन्ता व समस्या को हल कर सकेंगें।

विद्यार्थियों हेतु – विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों के अनुकूल होना चाहिए। विद्यालय में विद्यार्थियों के विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रमों जैसे –सेमीनार, कार्यशाला, खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए। शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों के प्रति ऐसा हो कि वे अपनी विषय संबंधी समस्याओं का समाधान शिक्षकों द्वारा करा सकें। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों पर किसी भी प्रकार की रोक–टोक ना होकर आगे बढ़ने के सुअवसर प्रदान किये जाए।

७. **सुझाव:**

प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर शासकीय एवं निजी विद्यालय के प्रबंधन का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव व्यक्त किए जा सकते हैं :–

- विद्यालय का वातावरण शिक्षकों के अनुकूल होना चाहिए।
- विद्यालय में आदर्श प्रयोगशाला की सुविधा होनी चाहिए तथा शिक्षकों द्वारा छात्रों को प्रायोगिक कार्य करने हेतु प्रेरित करना चाहिए।
- विद्यालय में शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- विद्यालय में शिक्षकों के कार्यो का नियमित रूप से का निरीक्षण किया जाना चाहिए।
- विद्यालय में अभिभावक शिक्षक संघ मीटिंग का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विद्यालय में शिक्षकों हेतु सभी सुविधाएं उपयुक्त होनी चाहिए।
- प्रत्येक विद्यालय में पुस्तकाव्य की व्यवस्था की जानी चाहिए अथवा पुस्तकालय का में पुस्तकों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए, जिससे शिक्षकों एवं छात्रों का बौद्धिक विकास हो सके।
- प्रत्येक विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए।
- विद्यालय में शिक्षण कार्य के दौरान नवीनतम तकनीकों का प्रयोग किया जाना चाहिए तथा इन तकनीकों के प्रयोग करने हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- विद्यालय में शिक्षकों की शैक्षणिक अभिवृत्ति में विकास करने हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशाला एवं सेमीनार आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विद्यालय में अनुशासन समिति का गठन एवं क्रियान्वयन होना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने कार्य के प्रति ईमानदार होना चाहिए, केवल धनोपार्जन ही शिक्षक का उद्देश्य नहीं होना चाहिए।
- शिक्षकों की शैक्षणिक अभिवृत्ति छात्रों के मानसिक स्तर द्वारा भी प्रभावित होती है, अतः शिक्षकों को छात्रों के मानसिक स्तर का ध्यान रखना चाहिए।
- विद्यालय का वातावरण तनावपूर्ण ना होकर शांतिपूर्ण होना चाहिए।
- विद्यालय के प्राचार्य का व्यवहार एवं दृष्टिकोण प्रत्येक शिक्षक के लिए समान होना चाहिए।
- विद्यालय में सभी शिक्षकों में आपस में सहयोग की भावना होना चाहिए।
- सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अलावा अतिरिक्त कार्य जैसे जनगणना, पल्स पोलियो, चुनाव प्रशिक्षण में व्यस्त किया जाता है, जिससे शिक्षण कार्य प्रभावित होता है, अतः शिक्षकों की शैक्षणिक अभिवृत्ति कम होती है।
- सभी विद्यालयों में शिक्षकों को भैषर्जिक, शीतकालीन एवं ग्रीष्मकालीन अवकाश प्राप्त होना चाहिए।
- विद्यालयों में शिक्षकों को शिक्षण कौशल व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. आर. ए . शर्मा (2011)। *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार*। मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
2. उप्रेती, डी0सी0 एवं पन्त, ए .के. (1991)। प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, परिसर, अल्मोड़ा।
3. कपिल, एच.के. & सिंह, ममता (2013)। *सांख्यिकी के मूल तत्व*। आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।

4. कौल, लोकेश (2012)। *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*। नोएडाः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
5. गेरैट, एच.ई. (2000)। *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग*। लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।
6. बैस्ट, जे. डब्ल्यू. (2011)। *रिसर्च इन एजुकेशन* । नई दिल्लीः पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
7. राय, पी. & राय, सी. पी. (2012)। *अनुसंधान परिचय* । आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
8. Ali, M. A. (2011). A study of the Job Satisfaction of secondary school teachers. *Journal of education and practice, International Institute for Science, Technology & Educator* Vol-*2*(1).
9. Asthana, A. (2010). Job Satisfaction among teachers of visual handicapped. *Indian Journal of Educational Research.* Vol-29.
10. Bala, Bronay (2011). Job Satisfaction of non-government college teachers in Bangladesh. *Journal of Education and practice, International Institute for Science, Technology and Educational Publication*. Vol-2(*4*).
11. Bandhana (2011). Job satisfaction and values among kandriya vidyalay teachers. *Journal of Educaton and practice, International Institute of Science, Technology and Education.* Vol-2.
12. Bettencourt, A. M. L. (2003). Satisfaction with health care and community Esteem among Rural women. *Journal of Analysis of Social Issues and Public Policy, Blackwell Publishin.*Vol 3 (I).
13. Kaushik, D.K. (1969). *Job Satisfaction among Higher Secondary School Teachers and its Relationship with Teacher Success/ Efficiency*. Unpublished M.Ed. Dissertation. University of Aligarh Muslim.
14. Sah, Rambha (1977). *Study of Job Satisfaction in Relation to the Level of Teaching*. Unpublished M.Ed. Disertation. University of Kumaon.

वेबसाइट

www.google.com
www.sodhganga.inflibnet.ac.in